# भगवान लकुलीश जी

भगवान शिवजी ने वाराह कल्प के वैवस्वत मन्वन्तर के प्रत्येक द्वापरयुग और कलियुग के संधिकाल में योगीश्वर रुप से अवतार धारण कर प्रत्येक बार चार शिष्यों द्वारा विश्व में योगविद्या और सनातन संस्कृति प्रसार का कार्य करवाया। वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर के अड्ठाईसवें कलियुग की शुरुआत में भगवान शिवजी ने मानव काया में अवरोहण (उतरना, प्रवेश) किया। वह तीर्थ कायावरोहण नाम से प्रसिद्ध है। शिवजी ने एक हाथ में बीजोरु फल और दूसरे हाथ में धर्मदंड (लकुट) धारण किया। लकुट धारण किये हुए शिवजी भगवान "लकुलीश" नाम से प्रसिद्ध है।

**( शतरुद्र संहिता, शिवपुराण )**